नारी जीवन और मुंडारी लोक गीत: सामाजिक योगदान और सांस्कृतिक परंपराओं की समीक्षा

मोनिका बोदरा (Monika Bodra)

शोधार्थी
जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा संकाय, मुण्डारी विभाग
रांची विश्वविद्यालय, रांची
संवाददाता लेखक: मोनिका बोदरा

Published in IJIRMPS (E-ISSN: 2349-7300), Volume 12, Issue 1, Jan-Feb 2024

License: Creative Commons Attribution-ShareAlike 4.0 International License

1.परिचय

मुंडारी लोक गीतों में नारी जीवन का अध्ययन एक गहन और महत्वपूर्ण विषय है, जो आदिवासी समाज की सांस्कृतिक धरोहर और सामाजिक संरचना को उजागर करता है। मुंडा जनजाति, मुख्यतः झारखंड, पश्चिम बंगाल, ओडिशा, और छत्तीसगढ़ के क्षेत्रों में निवास करती है, और उनकी समृद्ध संस्कृति एवं परंपराएँ उनके लोक गीतों में प्रतिबिंबित होती हैं। इन गीतों में महिलाओं की भूमिका और उनके जीवन के विभिन्न पहलुओं का सूक्ष्म और सजीव वर्णन मिलता है। मुंडारी समाज में महिलाओं की भूमिका पारिवारिक धुरी से लेकर समुदाय के महत्वपूर्ण सदस्य तक विस्तृत है। वे घरेलू जिम्मेदारियों के साथ-साथ खेती, हस्तशिल्प, और अन्य आर्थिक गतिविधियों में भी सक्रिय भागीदारी निभाती हैं। विवाह गीतों में नववधू की भावनाएं, उसकी आशाएँ और उसकी सामाजिक स्थिति का विवरण मिलता है, जो पारिवारिक और सामाजिक रिश्तों की गहरी समझ प्रदान करता है। त्योहारों और उत्सवों के दौरान, महिलाएं अपनी धार्मिक आस्था और सांस्कृतिक परंपराओं का उत्सव मनाती हैं, जिसमें उनकी संगीत और नृत्य की प्रतिभा प्रमुखता से उभरती है। इन गीतों में महिलाओं के जीवन में आने वाली कठिनाइयों, जैसे गरीबी, सामाजिक भेदभाव, और घरेलू संघर्षों का भी चित्रण है, जो उनके धैर्य और संघर्ष की कहानी को उजागर करता है। प्राकृतिक आपदाओं और पर्यावरणीय चुनौतियों से निपटने में भी उनकी महत्वपूर्ण भूमिका को लोक गीतों में दर्शाया गया है। मुंडारी लोक गीतों में महिलाओं का आर्थिक योगदान, विशेषकर खेती और कारीगरी में, भी प्रमुखता से उल्लेखित है, जो उनके परिश्रम और आत्मनिर्भरता को दर्शाता है। इसके अतिरिक्त, कुछ गीतों में महिलाओं के सशक्तिकरण और आत्मनिर्भरता की कहानियाँ भी सुनाई देती हैं, जो समाज में उनकी ताकत और संघर्ष की प्रेरणादायक छवि प्रस्तुत करती हैं। इन गीतों के माध्यम से, मुंडारी महिलाएं अपनी भावनाओं और अनुभवों को न केवल साझा करती हैं, बल्कि अपनी संस्कृति और परंपराओं को भी जीवित रखती हैं।[1] इस प्रकार, मुंडारी लोक गीतों में नारी जीवन का अध्ययन न केवल उनके सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन की गहरी समझ प्रदान करता है, बल्कि उनके संघर्ष, योगदान, और सशक्तिकरण[2] की कहानी को भी व्यापक रूप में प्रस्तुत करता है, जो समाज में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका को मान्यता देता है।[3]

1.1 मुंडारी समाज और उनके लोक गीतों का परिचय

मुंडारी समाज, मुख्यतः झारखंड, पश्चिम बंगाल, ओडिशा और छत्तीसगढ़ के क्षेत्रों में निवास करने वाली एक प्रमुख आदिवासी जनजाति है, जिसकी संस्कृति और परंपराएँ अत्यंत समृद्ध हैं। इस समाज की सांस्कृतिक धरोहर उनके लोक गीतों में गहराई से रची-बसी है। मुंडारी लोक गीत न केवल उनके जीवन की दैनिक गतिविधियों, उत्सवों और अनुष्ठानों का प्रतिबिंब हैं, बल्कि सामाजिक संरचना, मान्यताओं और परंपराओं का भी महत्वपूर्ण अभिलेख हैं। ये गीत महिलाओं की भूमिका, उनके संघर्ष, और समाज में उनके योगदान को विशेष रूप से उभारते हैं। नृत्य, संगीत और गीत मुंडारी संस्कृति का अभिन्न हिस्सा हैं, जो उनकी सामूहिक चेतना और सांस्कृतिक पहचान को सजीव रखते हैं। लोक गीतों के माध्यम से मुंडारी समाज अपनी धरोहर को संजोए रखता है और आने वाली पीढ़ियों को अपने इतिहास और परंपराओं से जोड़ता है।[4]

---

[1] कुमारी, लक्ष्मी, और एमडी मोजीबुर रहमान। "जर्नल ऑफ एथ्नोग्राफी एंड फोकलोर।"

[2] दैमारी, स्मिता। "भारतीय आदिवासियों के दर्दनाक वसीयतनामे और प्रशंसापत्र: भारतीय लेखकों के आख्यानों से एक चुनिंदा अध्ययन।" जर्नल ऑफ़ पॉज़िटिव स्कूल साइकोलॉजी (2022): 6221-6227।

[3] वाडली, सुसान एस. "दक्षिण एशिया का लोक साहित्य।" *जर्नल ऑफ़ साउथ एशियन लिटरेचर* 11 (1975)।

4 मलिक, समर बसु। "कॉमन्स टू कैपिटल: झारखंड के मुंडाओं के विशेष संदर्भ के साथ।" सामाजिक परिवर्तन 41.3 (2011): 381-396।

1.2 परिवार और समुदाय में महिलाओं की भूमिका

मुंडारी समाज में महिलाओं की भूमिका परिवार और समुदाय दोनों में अत्यंत महत्वपूर्ण और बहुआयामी होती है। परिवार के स्तर पर, महिलाएं घर की धुरी होती हैं और घरेलू कार्यों, बच्चों की परवरिश, और पारिवारिक संबंधों को मजबूती प्रदान करने में प्रमुख भूमिका निभाती हैं। वे न केवल घर की देखभाल करती हैं, बल्कि आर्थिक गतिविधियों में भी सक्रिय योगदान देती हैं, जैसे खेती, पशुपालन और हस्तशिल्प। मुंडारी लोक गीतों में महिलाओं के इन कार्यों का सजीव वर्णन मिलता है, जिससे उनकी मेहनत और समर्पण का पता चलता है। सामुदायिक स्तर पर, महिलाएं विभिन्न सामाजिक और धार्मिक आयोजनों में सक्रिय भागीदारी करती हैं। वे त्योहारों और उत्सवों में नृत्य और संगीत के माध्यम से अपनी सांस्कृतिक धरोहर को जीवित रखती हैं और अगली पीढ़ी को इन परंपराओं से जोड़ती हैं। महिलाओं की सामाजिक स्थिति को लोक गीतों में सम्मान और गरिमा के साथ प्रस्तुत किया गया है, जो उनके सामुदायिक योगदान को मान्यता देता है। इसके अलावा, महिलाएं समुदाय के निर्णय लेने की प्रक्रियाओं में भी शामिल होती हैं, विशेषकर जब सामाजिक या पारिवारिक मुद्दों का समाधान करना हो। मुंडारी समाज में महिलाओं की भूमिका केवल पारंपरिक घरेलू जिम्मेदारियों तक सीमित नहीं है, बल्कि वे अपने समुदाय की संरचना और सांस्कृतिक पहचान के निर्माण और संरक्षण में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। उनकी सहभागिता और योगदान को लोक गीतों में प्रमुखता से स्थान दिया गया है, जो उनके जीवन के विभिन्न पहलुओं को उजागर करता है और उनकी महत्वपूर्ण भूमिका को मान्यता देता है।

1.3 घरेलू जिम्मेदारियाँ और सामाजिक योगदान

मुंडारी समाज में महिलाओं की घरेलू जिम्मेदारियाँ और सामाजिक योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण और व्यापक हैं। घरेलू स्तर पर, महिलाएं घर की देखभाल, बच्चों की परवरिश, भोजन बनाना, साफ-सफाई और परिवार के अन्य सदस्यों की देखभाल जैसे कार्यों में संलग्न होती हैं, साथ ही खेती-बाड़ी, पशुपालन और जलाऊ लकड़ी इकट्ठा करने में भी सक्रिय भूमिका निभाती हैं, जो परिवार की आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ करने में सहायक होते हैं। सामाजिक दृष्टि से, महिलाएं त्योहारों, विवाह समारोहों और अन्य सामुदायिक उत्सवों में पारंपरिक गीतों और नृत्य के माध्यम से अपनी सांस्कृतिक धरोहर को जीवित रखती हैं और अगली पीढ़ी को इन परंपराओं से जोड़ती हैं। वे समुदाय की समस्याओं के समाधान और सामाजिक एकता बनाए रखने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। मुंडारी लोक गीतों में महिलाओं की इन भूमिकाओं का सजीव चित्रण मिलता है, जो उनके परिश्रम, समर्पण और सांस्कृतिक संवेदनशीलता को उजागर करता है, और उनके जीवन और समाज में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका को मान्यता देता है।[5]

1.4 विवाह और रिश्तों का चित्रण

मुंडारी लोक गीतों में विवाह और रिश्तों का चित्रण गहराई और संवेदनशीलता के साथ किया गया है, जो आदिवासी समाज की सांस्कृतिक और सामाजिक धरोहर को उजागर करता है। विवाह गीतों में नववधू की भावनाओं, उसकी आशाओं और उसकी नई जिम्मेदारियों का सजीव वर्णन मिलता है। ये गीत पारिवारिक और सामाजिक रिश्तों की जटिलताओं को भी उजागर करते हैं, जिसमें दूल्हा-दुल्हन के बीच के संबंध, ससुराल और मायके के बीच की भावनात्मक खींचतान, और विवाह के दौरान निभाए जाने वाले रीति-रिवाज शामिल हैं। रिश्तों का यह चित्रण न केवल नववधू के जीवन में आने वाले परिवर्तनों को दर्शाता है, बल्कि परिवार और समुदाय में उसकी नई भूमिका और सम्मान को भी प्रकट करता है। मुंडारी लोक गीतों में विवाह से संबंधित गीतों के माध्यम से आदिवासी समाज की परंपराओं, मान्यताओं और भावनाओं का गहरा और समृद्ध चित्रण किया गया है।[6]

1.5 सांस्कृतिक और धार्मिक भूमिका

मुंडारी समाज में महिलाओं की सांस्कृतिक और धार्मिक भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है, जो उनकी पहचान और सामुदायिक जीवन के केंद्र में है। महिलाएं विभिन्न त्योहारों, उत्सवों और धार्मिक अनुष्ठानों में सक्रिय भागीदारी करती हैं, जहां वे पारंपरिक गीतों और नृत्य के माध्यम से अपनी सांस्कृतिक धरोहर को जीवित रखती हैं। इन आयोजनों में उनकी भागीदारी न केवल उत्सवों की शोभा बढ़ाती है, बल्कि समुदाय के धार्मिक और सांस्कृतिक विश्वासों को भी मजबूत करती है। मुंडारी लोक गीतों में महिलाओं की धार्मिक आस्था, उनकी प्रथाओं और अनुष्ठानों का गहरा चित्रण मिलता है, जो उनके जीवन के आध्यात्मिक और सामाजिक पहलुओं को उजागर करता है। सांस्कृतिक गतिविधियों में उनकी भूमिका अगली पीढ़ी को परंपराओं और रीति-रिवाजों से जोड़ने में भी महत्वपूर्ण होती है, जिससे समाज में सांस्कृतिक निरंतरता बनी रहती है।[7]

1.6 संघर्ष और चुनौतियाँ

मुंडारी महिलाओं का संघर्ष और चुनौतियों से युक्त जीवन गीतों के माध्यम से अत्यंत प्रभावशाली रूप में प्रकट होता है। उन्हें समाज में उन्नति के लिए प्रतिस्पर्धा करना पड़ता है, जिसमें उन्हें समूहबद्धता और साहस की आवश्यकता होती है। इन गीतों में महिलाओं की सामाजिक और आर्थिक स्थिति के विभिन्न पहलुओं का प्रतिबिंब मिलता है, जिनमें उनकी संघर्षों और परिश्रम की कहानियाँ स्पष्ट रूप से दिखाई जाती हैं। इन गीतों में महिलाओं की अदम्य साहस, आत्म-समर्पण और प्रेरणाशील भावनाएं उजागर होती हैं, जो उन्हें अपने जीवन के हर क्षेत्र में अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए मजबूत बनाती हैं।[8]

1.7 स्वतंत्रता और आत्मनिर्भरता

---

5 मलिक, समर बसु। "कॉमन्स टू कैपिटल: झारखंड के मुंडाओं के विशेष संदर्भ के साथ।" सामाजिक परिवर्तन 41.3 (2011): 381-396।
6 मुखर्जी, महुआ। "भारत के आदिवासी समाज में महिलाओं की स्थिति पर विचार।" प्रतिबिंब 6.1 (2015)।

7 बेडेनोच, नाथन, मधु पूर्ति और निशांत चोकसी। "मुंडारी में नैतिक प्रस्ताव के रूप में अभिव्यंजनाएँ।" भारतीय भाषाविज्ञान 80.1-2 (2019): 1-17।

8 बेडेनोच, नाथन, मधु पूर्ति और निशांत चोकसी। "मुंडारी में नैतिक प्रस्ताव के रूप में अभिव्यंजनाएँ।" भारतीय भाषाविज्ञान 80.1-2 (2019): 1-17।

मुंडारी महिलाओं की स्वतंत्रता और आत्मनिर्भरता की गाथा लोक गीतों में एक महत्वपूर्ण पहलू है। उन्हें अपने अधिकारों की रक्षा करने के लिए समर्थ होने का संघर्ष किया गया है, जिसमें स्वतंत्रता के लिए लड़ाई और स्वतंत्रता की प्राप्ति के लिए उनकी लड़ाई की कहानियाँ उजागर होती हैं। इन गीतों में उनकी सामाजिक और आर्थिक स्थिति के विभिन्न पहलुओं का प्रतिबिंब होता है, जिनमें उनकी स्वतंत्रता और स्वाधीनता की चुनौतियों का सामना करने की कहानियाँ उजागर होती हैं। इन गानों में महिलाओं की आत्मनिर्भरता, साहस, और स्वाधीनता की भावना सुनिश्चित की जाती है, जो उन्हें अपने जीवन में सफलता और स्वाधीनता की दिशा में आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करती है।[9]

II. साहित्य की समीक्षा

दैमारी, स्मिता. (2022) यह शोधपत्र आघात अध्ययन और जनजातियों से संबंधित है। शोधपत्र चयनित भारतीय लेखन में पात्रों द्वारा अनुभव किए गए आघातों के बारे में बात करता है। यह भारत के आदिवासियों द्वारा सामना किए जाने वाले उथल-पुथल के बारे में चर्चा करता है, जिसे लेखकों ने अपने लेखन के माध्यम से दर्शाया है। इस शोधपत्र के सभी उपन्यासों में, मूल के अंग्रेजी भाषा में अनुवादित संस्करण को ध्यान में रखा गया है। पहला उपन्यास "द अराया वूमन" आदिवासी समुदाय 'अराया' द्वारा झेली गई पीड़ा और दुर्दशा का वर्णन करता है। उपन्यास दर्शाता है कि कैसे आदिवासियों को धोखा दिया गया और उच्च जाति और अन्य लोगों द्वारा उनके साथ कैसा व्यवहार किया गया। लक्ष्मण गायकवाड़ का दूसरा उपन्यास "द ब्रांडेड" उनके जीवन के हर पहलू और क्षेत्र में उच्च वर्ग, पुलिस और सरकार से मिले व्यवहार के बारे में बात करता है। "पराजा" नामक तीसरा उपन्यास भी इस बारे में बात करता है कि कैसे अमीर अधिकारियों और साहूकारों ने अशिक्षित आदिवासी लोगों का फायदा उठाया और उनके पैसे लूट लिए। चौथा उपन्यास 'व्हेन द कुरिंजी ब्लूम्स' बडागा जनजाति की तीन पीढ़ियों के बारे में बात करता है।

मिंज, सुश्री जूही रोज वंदना। (2021) लोकगीत किसी विशेष समुदाय की परंपरा, संस्कृति, ज्ञान और शिक्षाओं को समाहित करते हैं। यह अक्सर अपने भीतर उस समुदाय के लोगों की विश्वदृष्टि को समेटे रहता है। यह शोधपत्र ओरांव जनजाति की एक विशेष लोककथा की जांच करने का प्रयास करता है, जो मूल रूप से भारत के पूर्वी भाग में छोटा नागपुर पठार पर निवास करती है। भारत और दुनिया में जनजाति की पूर्वाग्रही धारणा के कारण, लोकगीत, हालांकि सैद्धांतिक रूप से मौखिक कला के रूप में संदर्भित किया गया है, लेकिन व्यावहारिक रूप से इसे अभी भी साहित्य का दर्जा नहीं दिया गया है। लोकगीतों की पूर्ण और व्यापक समझ के लिए लोकगीतों का अध्ययन भी आवश्यक है। प्रस्तुत शोधपत्र ओरांव के सांस्कृतिक जीवन के दायरे में ओरांव लोककथाओं का विश्लेषण करने का प्रयास करता है। शोधपत्र लोककथाओं के माध्यम से स्वदेशी चेतना की खोज करते हुए बर्बर और सभ्य, आदिम और उन्नत के द्वंद्वों पर सवाल उठाने का प्रयास करता है।

किरो, संतोष कुमार. (2021) यह शोधपत्र मुंडा जनजाति परिवार की लोककथाओं का समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से विश्लेषण करता है। यहाँ 'मुंडा' शब्द का प्रयोग सामान्य अर्थ में ऑस्ट्रो-एशियाई जनजातियों के लिए किया गया है जो ज़्यादातर झारखंड और ओडिशा और पश्चिम बंगाल के कुछ हिस्सों में रहते हैं। इस समूह में बड़ी संख्या में लोककथाएँ थीं। जबकि कुछ लोककथाएँ विद्वानों द्वारा एकत्रित की गई हैं और इस प्रकार संरक्षित हैं, उनमें से अधिकांश खो गई हैं। इस शोधपत्र में कुछ लोककथाओं को पाठकों को उनका अनुभव देने के लिए मूल मुंडा छंदों में रखा गया है, जबकि अन्य, विशेष रूप से लंबी लोककथाओं के लिए, लोककथाओं की आत्मा को बनाए रखते हुए उनका अंग्रेजी अनुवाद प्रस्तुत किया गया है। मुंडाओं के पास हर अवसर के लिए लोककथाएँ हैं - चाहे वह खुशी का हो या दुख का - जो न केवल उनके विश्वदृष्टिकोण, सामाजिक मूल्यों और नैतिकता को उजागर करती हैं बल्कि जीवन और अस्तित्व को अर्थ भी देती हैं। लोककथाओं में उनकी दुनिया बसती थी, और उनमें मुंडा रहते थे। ऐसे समय में जब लोककथाएं समाज से लगभग लुप्त हो चुकी हैं, और मुंडाओं की लोककथाओं की व्याख्या विद्वानों द्वारा अभी भी व्यापक रूप से नहीं की गई है, यह आलेख मुंडा समाज और संस्कृति में उनके महत्व का विश्लेषण करता है।

सतीशा, सुश्री मुक्ता, आदि (2020) यह शोधपत्र झारखंड राज्य में बोली जाने वाली आदिवासी भाषा नागपुरी की विशेषताओं का अध्ययन करने का एक प्रयास है। नागपुरी इंडो आर्यन भाषा परिवार से संबंधित है। यदि इन भाषाओं को संरक्षित करने के लिए तत्काल उपाय नहीं किए गए तो ये आदिवासी भाषाएँ विलुप्त हो सकती हैं। ये स्वदेशी भाषाएँ प्राचीन ज्ञान और प्राचीन जीवन शैली का भंडार हैं क्योंकि उनके साहित्य में लोक कथाओं, लोक गीतों, लघु कथाओं आदि के रूप में अपार संपदा छिपी हुई है। वाक्यविन्यास, शब्दावली, भाषण के अंग, काल, व्याकरण के नियम, ऋतुओं, स्थानों, रंगों, समय आदि के लिए शब्दों की शब्दावली पर शोध प्राइमर बनाने में मदद करेगा। इन प्राइमरों का उपयोग स्कूलों में नागपुरी बोलने वाले आदिवासी छात्रों को शिक्षा प्रदान करने, नागपुरी-हिंदी या नागपुरी-अंग्रेजी शब्दकोश तैयार करने के लिए किया जा सकता है ताकि उनके अमूल्य साहित्य का हिंदी, बंगाली, उड़िया और यहाँ तक कि अंग्रेजी जैसी मुख्यधारा की भारतीय भाषाओं में अनुवाद किया जा सके। इससे पूरे देश में इन स्वदेशी भारतीय भाषाओं को संरक्षित करने की आवश्यकता के बारे में जागरूकता बढ़ेगी।

बैडेनोच एट अल., (2019) यह शोधपत्र झारखंड में बोली जाने वाली मुंडारी भाषा में नैतिक प्रस्तावों के रूप में अभिव्यंजना पर चर्चा करता है। अभिव्यंजना पारंपरिक रूप से भाषा के अध्ययन के लिए परिधीय रही है, लेकिन हाल ही में इस वर्ग के शब्दों पर अधिक ध्यान दिया जाने लगा है। ओनोमेटोपोइया की संकीर्ण अवधारणा से आगे बढ़ते हुए, भाषाविदों ने चित्रणात्मक भाषा के विचार पर चर्चा करना शुरू कर दिया है, जिसमें संवेदी धारणा को विशद शब्दों में संप्रेषित किया जाता है। इस शोधपत्र में डेटा को एक जातीय-भाषाई अन्वेषण के रूप में प्रस्तुत किया गया है कि कैसे अभिव्यंजना में नैतिक या नैतिक अर्थ हो सकते हैं, इसके अलावा, या कुछ मामलों में संवेदी धारणा के चित्रण के बजाय। हम तर्क देते हैं कि नैतिक प्रस्तावों के रूप में, मुंडारी अभिव्यंजना भाषाई प्रथाओं का हिस्सा हैं जो सामाजिक व्यवहार, व्यक्तिगत संबंधों और सांस्कृतिक संस्थानों के आदर्श प्रकारों का निर्माण और पुनर्निर्माण करते हैं।

[9] मुखर्जी, महुआ। "भारत के आदिवासी समाज में महिलाओं की स्थिति पर विचार।" प्रतिबिंब 6.1 (2015)।

अर्नोल्ड, एलिसन. (2017) दक्षिण एशिया 5 मिलियन वर्ग किलोमीटर से थोड़ा ज़्यादा क्षेत्र में फैला है, जो एशियाई महाद्वीप का मात्र 11 प्रतिशत है, फिर भी यह दुनिया के दूसरे सबसे ज़्यादा आबादी वाले देश (भारत) को शामिल करता है, यह दुनिया की सबसे ऊँची चोटियों (हिमालय) पर गर्व करता है, और इसका इतिहास दुनिया की सबसे पुरानी सभ्यताओं में से एक (सिंधु घाटी) तक जाता है। इस क्षेत्र को मुख्य रूप से इसकी भौतिक स्थिति से परिभाषित किया जाता है, जो हिमालय से दक्षिण में भारतीय उपमहाद्वीप और भारत की पूर्वी सीमा से लेकर पाकिस्तान और अफ़गानिस्तान की पश्चिमी सीमाओं तक फैला हुआ है। इन भू-राजनीतिक सीमाओं के भीतर, दक्षिण एशिया के लोग अफ़गानिस्तान, बांग्लादेश, भूटान, भारत, नेपाल, पाकिस्तान और श्रीलंका (मानचित्र 1) के सात राष्ट्र राज्यों से संबंधित हैं। यूरोप की आबादी (रूस और पूर्व सोवियत संघ के देशों को छोड़कर) की तुलना में, जिसमें 5 मिलियन वर्ग किलोमीटर से कम क्षेत्र में पच्चीस से ज़्यादा देश शामिल हैं, दक्षिण एशिया की आबादी कम विविधतापूर्ण लग सकती है। हालाँकि, दक्षिण एशियाई लोगों की पहचान उनकी राष्ट्रीयता में नहीं बल्कि उनकी विशिष्ट जातीय पृष्ठभूमि, क्षेत्रीय संस्कृतियों, भाषाओं, धर्मों और सामाजिक श्रेणियों में निहित है, जो राष्ट्रीय और राजनीतिक सीमाओं से परे हैं।

कुमारी, लक्ष्मी और एमडी मोजिबुर रहमान इस अध्ययन का उद्देश्य खारिया जनजाति की उत्पत्ति के बारे में गहन ज्ञान प्राप्त करना और झारखंड की इस अनोखी खारिया जनजाति की उत्पत्ति के बारे में तथ्यों का विस्तार करना है। सृजन मिथक जनजाति के निर्माण, विनाश और पुनः निर्माण की स्पष्ट तस्वीर को चित्रित करने के लिए एक उपकरण के रूप में कार्य करते हैं। सृजन कथाओं की शैली हमेशा आकर्षक होती है और यह शिक्षाविदों और मानवविज्ञानियों का ध्यान आकर्षित करती रहती है। हाल के वर्षों में झारखंड की खारिया जनजाति का गहन अध्ययन नहीं किया गया है। इस क्षेत्र से होने और निकट से देखने के कारण यह ध्यान में आया कि यह स्वदेशी जनजाति अपना मूल सार और संस्कृति खो रही है। इसलिए, जनजाति की शानदार संस्कृति और साहित्य को बनाए रखने के लिए, जनजाति के इतिहास और मिथकों पर फिर से विचार करने की आवश्यकता थी। यह अध्ययन विस्तार से, मानव जाति की शुरुआत से लेकर मानवता और मानव जाति के विनाश और पुनरुद्धार तक की उत्पत्ति मिथकों का वर्णन करता है। इसने उनके जीवन, रीति-रिवाजों और इस दुनिया में उनके रहने और जीविका के तरीके से संबंधित परंपरा के प्रति उनके दृष्टिकोण को समझाया है। प्रस्तुत कृति खारिया जनजाति का नृवंशविज्ञान विवरण है और इसमें रहस्य की उन परतों को उजागर करने का प्रयास किया गया है जिन पर बहुत अधिक शोध नहीं किया गया है। यह लेखन खारिया जनजाति की संस्कृति को चित्रित करता है जिसे इस समकालीन दुनिया में पर्याप्त रूप से मान्यता नहीं मिली है। हमारे देश के अन्य साहित्य की तरह आदिवासी साहित्य को अधिक पसंद नहीं किया जाता है। अध्ययन का यह तरीका इस विधा में एक नया आयाम जोड़ेगा और इस प्रकार भविष्य के शोधकर्ताओं के लिए नई संभावनाएं प्रदान करेगा।

मुखर्जी, महुआ. (2015) मानव समाज में पुरुषों और महिलाओं की स्थिति निर्धारित करने में लिंग भेद को हमेशा ध्यान में रखा जाता है। भारत की जनजातियों में, महिलाओं को हमेशा महिलाओं के रूप में देखा जाता है। लेकिन उन्हें सामाजिक रूप से पुरुषों के बराबर माना जाता है, हालांकि कुछ क्षेत्रों में, महिलाओं की स्थिति को इस आधार पर महत्व दिया जाता है कि वे मानव जाति का जनन आधार हैं। मातृसत्तात्मक समाज में, संतानों का नाम मातृ पक्ष की परंपराओं के अनुसार रखा जाता है। मातृ पक्ष की अवहेलना को मानव जाति की विरासत का अनादर माना जाता है। एक पुरुष मातृ पक्ष के प्रति गहरा दायित्व रखता है और भारत में आदिवासी संस्कृति का इसमें एक मजबूत आधार है। मुंडा, खारिया और भारत के सभी दक्षिणी इलाके अभी भी मातृ पंथ की नैतिक वैधता को संजोए हुए हैं, जिसे वे भारत में आदिवासी संस्कृति के प्रवाह और निरंतरता का स्रोत मानते हैं। कुछ लोगों के अनुसार, वैश्वीकरण ने आदिवासी महिलाओं के पारंपरिक दृष्टिकोण को झटका दिया है और उन्हें वस्तुओं की स्थिति में गिरा दिया है।

चक्रवर्ती, मधुपर्णा. (2014) बीमारी, स्वास्थ्य और 'श्वेत जादू' या उपचार की अवधारणाओं से संबंधित विश्वास प्रणालियाँ और प्रथाएँ दुनिया भर की सभी संस्कृतियों में पाई जाती हैं। किसी विशिष्ट सांस्कृतिक समूह के लोग स्वास्थ्य, बीमारी और तंदुरुस्ती को कैसे परिभाषित करते हैं, यह कई कारकों से प्रभावित होता है। यह शोधपत्र पूर्वी और पश्चिमी भारत के कुछ आदिवासी समुदायों द्वारा अपनाई जाने वाली विभिन्न शमनवादी प्रथाओं के बारे में जानकारी प्रदान करेगा। इस शोधपत्र में उन समुदायों की उपचार प्रथाओं का नृवंशविज्ञान संबंधी अध्ययन भी शामिल होगा। चूँकि जादू-टोना और शमनवाद के बीच संबंध भारत के लगभग सभी आदिवासी समाजों में काम करते थे, इसलिए यह शोधपत्र उस संबंध के दायरे का पता लगाने का भी प्रयास करेगा। इसके अलावा, मैं 'काला जादू' और 'श्वेत जादू' से संबंधित मुद्दों को भी संबोधित करने का प्रयास करूँगा क्योंकि ये दोनों प्रथाएँ भारत के आदिवासी समुदायों में प्रचलित हैं। हालाँकि, अपने वर्तमान प्रयास में, मेरा इरादा विशेष रूप से चिकित्सा और जादू-टोने के बीच संबंध के बारे में चर्चा शुरू करने का नहीं है, बल्कि जादू-टोना और शमनवाद और भारत के आदिवासियों द्वारा प्रचलित उपचार के पारंपरिक रूप के साथ इसके संबंध पर गहन अध्ययन प्रस्तुत करना है।

मलिक, समर बसु. (2011) भारत का जनजातीय और पारिस्थितिक इतिहास औपनिवेशिक और उत्तर-औपनिवेशिक राज्य नीति के तहत प्राकृतिक साझा संसाधनों को निजी संपत्ति में जबरन बदलने का इतिहास रहा है। 1990 के दशक के दौरान और उसके बाद संरचनात्मक समायोजन कार्यक्रम की अगली अवधि में राज्य ने सार्वजनिक क्षेत्र को बहुराष्ट्रीय निगमों और भारतीय छोटी और बड़ी कंपनियों के लिए निजीकरण के लिए खोल दिया है। प्राकृतिक साझा संसाधनों को पूंजी के रूप में माना जा रहा है। स्वदेशी लोगों के लिए, प्राकृतिक साझा संसाधनों का निजीकरण न केवल आजीविका का नुकसान है, बल्कि उनके सामुदायिक जीवन, उनकी समतावादी संस्कृति और जैव-केंद्रित विश्व दृष्टिकोण का विघटन है। प्राकृतिक साझा संसाधनों के विघटन से ज्ञान साझा संसाधनों, पशु साम्राज्य को वश में करने का ज्ञान, वनस्पति और जलवायु के औषधीय मूल्यों में भी कमी आती है। वन-आधारित समाज में महिलाओं के लिए प्राकृतिक साझा संसाधन उनके प्राकृतिक और अनुष्ठानिक ज्ञान का भंडार, उनकी अर्थव्यवस्था का गढ़ और, सबसे महत्वपूर्ण बात, उनकी शक्ति और स्थिति का स्रोत रहा है। साझा संसाधनों के नुकसान से पितृसत्ता का विकास होता है। गायब होते हुए साझा संसाधन समुदाय को आजीविका संसाधनों के निजीकरण की प्रमुख धारणा को आत्मसात करने के लिए प्रेरित करते हैं, जिसके परिणामस्वरूप कई पारंपरिक संस्थाएँ बिखर जाती हैं जो साझा संसाधनों और सामुदायिक उत्पादन पद्धति को मजबूत करती हैं।

प्राकृतिक संसाधनों और सामुदायिक श्रम के पुराने साझा संसाधनों के विनाश से श्रम बाजार और प्राकृतिक संसाधन बैंक का एक नया साझा क्षेत्र सामने आ रहा है, जिसका पूंजीपति शोषण कर रहे हैं और अमीर इसका आनंद ले रहे हैं, जबकि आम लोग पीड़ित हैं।

वडली, सुज़ैन एस. (1975)। इस खंड में लेखों का संग्रह बंगाल, तमिलनाडु, बिहार, हिंदी भाषी उत्तर भारत और नेपाल के विभिन्न प्रकार के लोक साहित्य पर केंद्रित है। एस.एस. वडली का एक परिचयात्मक लेख करीमपुर में लोक साहित्य के प्रकारों पर चर्चा करता है। शेष लेख सांस्कृतिक विषयों के अनुसार व्यवस्थित हैं: वी.पी. वटुक और एस. वटुक द्वारा "उत्तर पश्चिमी भारत के लोकगीतों में वासनापूर्ण सौतेली माँ"; डी. जैकबसन द्वारा "सामाजिक दूरी के गीत"; ई.ओ. हेनरी द्वारा "उत्तर भारतीय विवाह गीत"; बी.ई.एफ. बेक द्वारा "मुरुगन के लिए एक प्रशंसा-कविता"; आर.डी. मुंडा द्वारा "कुछ बंगाली वैष्णव लोक गीत"; ई. फ्रीडलैंडर द्वारा "बंगाली लोक गीतों में सांसारिक और नीरसता" जे. फिशर द्वारा लिखित "तीन नेपाली चुटकुले" और ए.आर.के. जाइड द्वारा लिखित "गोरम की चार लोक कथाएँ"।

III. अध्ययन का महत्व

"मुंडारी लोक गीतों में नारी जीवन एक अध्ययन" का अध्ययन महत्वपूर्ण है क्योंकि इससे हमें मुंडारी समाज की सांस्कृतिक, सामाजिक, और ऐतिहासिक पहचान को समझने में मदद मिलती है। यह अध्ययन महिलाओं की जीवनी और उनकी भूमिका को समझने के लिए महत्वपूर्ण है, जो उनकी सांस्कृतिक और सामाजिक पहचान के निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान करती है। इस अध्ययन से हमें महिलाओं के जीवन की विभिन्न पहलुओं, जैसे उनकी सामाजिक स्थिति, सामूहिक जीवन, आर्थिक स्थिति, और सांस्कृतिक योगदान को समझने में मदद मिलती है। इसके अलावा, यह अध्ययन हमें उनकी विचारधारा, अभिप्राय, और जीवनी से जुड़े महत्वपूर्ण संदेशों को भी समझने में सहायक होता है, जो हमें महिलाओं के समर्थन और समर्पण की दिशा में प्रेरित करता है। इस प्रकार, "मुंडारी लोक गीतों में नारी जीवन एक अध्ययन" अध्ययन मुंडारी समाज के सांस्कृतिक और सामाजिक विकास को समझने में महत्वपूर्ण योगदान करता है।

III. अध्ययन का दायरा

मुंडारी लोक गीतों में नारी जीवन एक अध्ययन" का अध्ययन उन्हें मुंडारी समाज की सांस्कृतिक, सामाजिक, और ऐतिहासिक पहचान को समझने में मदद करेगा। इस अध्ययन से हमें महिलाओं की जीवनी, समाज में उनकी भूमिका, और उनके संघर्षों को समझने का माध्यम मिलेगा। इसके अलावा, यह अध्ययन मुंडारी समाज में महिलाओं के समर्थन, स्वाधीनता, और समर्पण की महत्वपूर्णता को समझने में सहायक होगा। इस प्रकार, इस अध्ययन का दायरा मुंडारी समाज के सांस्कृतिक और सामाजिक विकास को समझने में महत्वपूर्ण होगा।

संदर्भ:

1. वाडली, सुसान एस. "दक्षिण एशिया का लोक साहित्य।" जर्नल ऑफ साउथ एशियन लिटरेचर 11 (1975)।
2. कीरो, संतोष कुमार। "मध्य भारत की ऑस्ट्रो-एशियाई जनजातियों की लोककथा: एक समाजशास्त्रीय वाचन।" जर्नल ऑफ आदिवासी और स्वदेशी अध्ययन 11.1 (2021): 25।
3. कुमारी, लक्ष्मी, और एमडी मोजीबुर रहमान। "जर्नल ऑफ एथ्नोग्राफी एंड फोकलोर।"
4. मुखर्जी, महुआ। "भारत के आदिवासी समाज में महिलाओं की स्थिति पर विचार।" प्रतिबिंब 6.1 (2015)।
5. मलिक, समर बसु। "कॉमन्स टू कैपिटल: झारखंड के मुंडाओं के विशेष संदर्भ के साथ।" सामाजिक परिवर्तन 41.3 (2011): 381-396।
6. बेडेनोच, नाथन, मधु पूर्ति और निशांत चोकसी। "मुंडारी में नैतिक प्रस्ताव के रूप में अभिव्यंजनाएँ।" भारतीय भाषाविज्ञान 80.1-2 (2019): 1-17।
7. सतीशा, सुश्री मुक्ता, आदि। "झारखंड की नागपुरी भाषा की विशेष विशेषताओं का एक अध्ययन।"
8. अर्नोल्ड, एलिसन। "दक्षिण एशिया और उसके संगीत की रूपरेखा।" द गारलैंड इनसाइक्लोपीडिया ऑफ़ वर्ल्ड म्यूज़िक। रूटलेज, 2017. 2-16।
9. दैमारी, स्मिता। "भारतीय आदिवासियों के दर्दनाक वसीयतनामे और प्रशंसापत्र: भारतीय लेखकों के आख्यानों से एक चुनिंदा अध्ययन।" जर्नल ऑफ़ पॉज़िटिव स्कूल साइकोलॉजी (2022): 6221-6227।
10. मिंज, सुश्री जूही रोज़ वंदना। "स्वदेशी चेतना की खोज: ओरांव लोककथा "द एनचांटेड मैंडोलिन" का एक महत्वपूर्ण अध्ययन।" इंटरनेशनल जर्नल ऑफ इंग्लिश लिटरेचर एंड सोशल साइंसेज (आईजेईएलएस) (2021): 337.
11. चक्रवर्ती, मधुपर्णा। "भारत के आदिवासी समाजों में जादू-टोना, शमनवाद और उपचार की परंपरा।" जर्नल ऑफ आदिवासी एंड इंडिजिनस स्टडीज (जेएआईएस) 1.1 (2014): 76-89।